विलुप्त हो रही हैं पक्षियों की प्रजातियां

नरेंद्र देवांगन

पहले जिधर देखो उधर पक्षी दिखाई देते थे। आसमान में, पानी में, ज़मीन पर हर तरफ काले, सफेद, भूरे, रंग-बिरंगे, छोटे-बड़े पंछी चहचहाते-फुदकते-उड़ते नज़र आते थे। लेकिन अब तो न वे रंग हैं और न ही सुरीली कूक। कुछ पक्षी गिनती के रह गए हैं और कुछ तो लुप्त ही हो चुके हैं। इस बरबादी के लिए ज़िम्मेदार और कोई नहीं, हम इंसान ही हैं।

केंद्र सरकार के अधीन काम कर रही संस्था भारतीय जीव-जंतु कल्याण परिषद ने भारत में जीव-जंतु संतुलन की खतरनाक होती जा रही स्थिति को लेकर गंभीर चेतावनी दी है। परिषद ने प्रदूषण निवारण मंडल को पत्र लिखकर पक्षियों की लगातार घट रही प्रजातियों के संरक्षण के निर्देश दिए हैं।

चेन्नै स्थित मुख्यालय के अनुसार भारत के आसमान में जैविक संतुलन बुरी तरह बिगड़ चुका है। इस तरह के असंतुलन वाले राज्यों में पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा, आंध्रप्रदेश, असम, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़ सहित राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली शामिल हैं। इन राज्यों की वायु में घुल चुके प्रदूषण का दुष्परिणाम है कि कौवों, गौरैयों, सोनचिरैया, कठफोड़वों और गिद्धों की संख्या लगातार घट रही है। पक्षियों की कई प्रजातियां तो लुप्त होने की कगार पर हैं।

हमारी धरती पक्षियों की तकरीबन 8600 प्रजातियों का आशियाना है। अगर उनकी उपजातियों और भौगोलिक प्रजातियों को जोड़ा जाए, तो यह संख्या बढ़कर 30 हज़ार तक पहुंच जाएगी। इस दुनिया को खूबसूरत, रंग-बिरंगा और सुरीला बनाने में इनका अहम योगदान है। जीवन छोटा हो या बड़ा, अनमोल होता है, खास तौर पर पक्षियों का, जो बहुत ही कोमल और सीधे-सादे जीव हैं। धरती पर जितना हक मनुष्यों का है, उतना ही पक्षियों समेत अन्य जीवधारियों का भी है। दुर्भाग्यवश आज पक्षियों के लिए वैसे हालात नहीं हैं, जैसे पहले हुआ करते थे। बढ़ती जनसंख्या, अतिक्रमण जैसे हालात ने पक्षियों के रहने की जगहों को तहस-नहस कर दिया है। माना जाता है कि पिछले 500 वर्षों में पक्षियों की 130 प्रजातियों का सफाया हुआ है, लेकिन आधुनिक समय के बदलते हालत में यह चेतावनी दी गई है कि इस सदी के अंत तक उनकी करीब 1250 प्रजातियां लुप्त हो जाएंगी।

रंग-बिरंगे फूलों की आकर्षक खुशबू के पीछे पक्षी ही प्रमुख कारक हैं। कई फूलों में परागण पक्षियों के माध्यम से ही होता है। इसके अलावा फसलों के लिए भी पक्षियों का होना ज़रूरी है। वे कृषि के लिए नुकसानदेह कीट-पतंगों को आहार बनाकर उत्पादन में सहायक होते हैं। लेकिन दुख की बात है कि इन साथियों की संख्या में निरंतर कमी आ रही है। कौआ, गौरैया, सोनचिरैया, कठफोड़वा और गिद्धों की 43 प्रजातियां विलुप्त हो चुकी हैं। यह जीव-जंतु कल्याण बोर्ड का आकलन है, जो शिकायतों की पड़ताल के बाद तैयार की गई है। पूरे विश्व में पक्षियों की सर्वाधिक प्रजातियां भारत में पाई जाती हैं। कुल 176 ऐसी पक्षी प्रजातियां हैं जो दुनिया में और कहीं पर भी देखने में नहीं मिलती।

पक्षियों और उनके आवास के संरक्षण के लिए प्रयास करने वाले वैश्विक संगठन बर्डलाइफ इंटरनेशनल के मुताबिक एशिया महाद्वीप में पाई जाने वाली 2700 पक्षी

प्रजातियों में से 323 पर विलुप्ति का खतरा मंडरा रहा है। चीन में 78, भारत में 73 और फिलिपींस में 69 प्रजातियों पर संकट है। बर्डलाइफ का यह भी कहना है कि पक्षियों की 41 प्रजातियां सबसे अधिक खतरे में हैं और उनमें से 11 तो शायद खत्म ही हो चुकी हैं। बर्डलाइफ इंटरनेशनल ने अपनी 'रेड डाटा बुक' में पक्षियों की विलुप्त होती प्रजातियों के लिए पूरी तरह से मानवीय क्रियाकलापों को ज़िम्मेदार माना है। विशेषज्ञों के अनुसार बढ़ती जनसंख्या का दबाव और आर्थिक विकास पक्षियों की इस हालत के लिए ज़िम्मेदार हैं। इसके अलावा प्राकृतिक संसाधन भी काफी दबाव झेल रहे हैं।

विलुप्ति की कगार पर पहुंची पक्षियों की प्रजातियों के पीछे सबसे बड़ा कारण पेड़ों की कटाई को माना गया है। पक्षियों की इस हालत के लिए 50 प्रतिशत ज़िम्मेदार है पेड़ों की कटाई, 30 फीसदी दोष है कृषि के लिए भूमि की बढ़ती ज़रूरत का और 20 प्रतिशत ज़िम्मेदार है झूम खेती यानी स्थान बदल-बदलकर होने वाली खेती। विशेषज्ञों का कहना है कि कुछ पक्षियों का जीवन खास प्रकार के माहौल पर ही निर्भर करता है। ऐसे में अगर माहौल में किसी तरह का परिवर्तन आता है, तो सबसे ज़्यादा खतरा इन पक्षियों को ही होता है।

गौरैया को नगर-नगर का चारण कहा जाता है। कोई गांव, कोई नगर आपको ऐसा नहीं मिलेगा, जहां गौरैया न हो। भारतवर्ष ही नहीं अन्य देशों में भी जहां मनुष्यों का निवास, वहीं गौरैया। इसका वैज्ञानिक नाम पैसर डोमेस्टिकस है, जिसे घरेलू चिड़िया कहा जाता है। बदलते समाज के वातानुकूलित ऊंचे बहुमंज़िले मकानों में ये भला अपना बसेरा कहां बना पाएंगी। तमाम घने पेड़ भी तो नहीं रहे जहां वे अपना घोंसला बना सकें। गौरैया कीड़े व इल्लियां खाती है, जिससे उन्हें प्रोटीन मिलता है लेकिन ये इल्लियां मिट्टी में मिलती हैं। जबकि आज बड़े-बड़े शहरों में ज़मीन पर कांक्रीट बिछाई जा रही है। उपयुक्त जगह के अभाव में प्रजनन करने में भी इन्हें दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। गौरैयों का भोजन घास और पौधों के बीज हैं, लेकिन सजावटी पौधों से गुलज़ार हो रहे शहरों में जहां आसपास थोड़े बहुत खेत हैं, उन खेतों में कीटनाशकों के छिड़काव के कारण गौरैया को खेतों में भी अपना आहार नहीं मिल पाता। काम वासनाओं के बाज़ार की वजह से भी हर वर्ष अनगिनत पशु-पक्षियों की हत्या होती है क्योंकि बहुत से हकीम और वैद्य पुरुषों की यौन शक्ति बढ़ाने का नुस्खा किसी न किसी जंतु में बताते हैं। मुंबई के क्रॉफर्ड बाज़ार में बेचे जाने वाले पशु-पक्षियों में लगभग 50 हज़ार पक्षी रोज़ आते हैं जिनका निर्यात भी होता है। किसी हकीम के नुस्खे के अनुसार गौरैया के मांस से कामोत्तेजक दवा तैयार की जाती है। इस दावे में कोई दम नहीं है। कोई भी पशु किसी को मर्द नहीं बना सकता, वह केवल कैल्शियम और प्रोटीन देता है जिन्हें आप पौष्टिक भोजन में ज़्यादा मात्रा में पा सकते हैं।

भारतीय उपमहाद्वीप बड़ी संख्या में पक्षियों का घर है। इसके अलावा काफी संख्या में प्रवासी पक्षी भी भारत में देखे जा सकते हैं। बहरहाल, बीते कुछ सालों में पक्षियों की कुछ प्रजातियों का पूर्ण विलोप हो चुका है। जैसे गुलाबी सिर वाली बतख, हिमालयी बटेर, साइबेरियाई सारस, सामान्य सारस, जर्डन्स कोर्सर, जंगली उल्लू, व्हाइट-बिल्ड हेरन, ओरिएंटल सारस, ग्रेटर एड्जुटेंट, सफेद सिर वाली बतख, सफेद पंखों वाली बतख, सोन चिड़िया, बंगाल फ्लोरिकन, लेसर फ्लोरिकन, नॉर्डमैंस ग्रीनशेंक, भस्मी गिद्ध, सफेद गिद्ध, लंबी चोंच वाला गिद्ध।

कौवों की लगातार कम होती संख्या भी चिंताजनक है। कौवों की संख्या में कमी के दो कारण हैं। पहला तो यह है कि वातावरण में अचानक जो परिवर्तन हो रहा है और खाद्य पदार्थों में जो ज़हरीली चीजें आ रही हैं, उनकी वजह से कौवों की प्रजनन क्षमता में कमी आने लगी है। दूसरी वजह यह है कि वृक्षों की अंधाधुंध कटाई से इनके लिए आवास की समस्या उत्पन्न हो गई है क्योंकि कौवों का स्वाभाव है कि वे एकांत में अपना घोंसला बनाते हैं जो आजकल उन्हें कम मिल पा रहा है। गौरतलब है कि यहां कौवों की मुख्यतः दो प्रजातियां देखी जाती हैं। एक जो पूरे काले होते हैं और दूसरे जिनके गले में सफेद

धारी होती है। सफेद धारी वाले कौवे तो अभी दिखाई पड़ जाते हैं, क्योंकि उनकी प्रतिरोधक क्षमता काले कौवों से कुछ ज़्यादा होती है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि सफेद धारी वाले कौवों पर बदलते पर्यावरण का असर नहीं पड़ेगा। कहना न होगा कि इनकी लगातार कम होती संख्या गिद्धों के खत्म होने से कम खतरनाक नहीं है। इनके नहीं रहने से पृथ्वी की पूरी खाद्य श्रृंखला ही असंतुलित हो जाएगी। तमाम किस्से बताते हैं कि इंसानी ज़िन्दगी में कौवों के महत्व को हमारे पुरखों ने बहुत पहले ही समझ लिया था। लेकिन अब इनकी कम होती संख्या चिंता का सबब बन रही है। कौवों द्वारा सिर पर चोंच मारना किसी इंसान के लिए अपशगुन होता है या नहीं, यह तो नहीं पता लेकिन आज जाने-अनजाने मशीनीकरण के ज़रिए हम जिस तरह प्रकृति से छेड़छाड़ कर रहे हैं, वह इन कौवों के लिए अपशगुन ज़रूर साबित होने जा रहा है।

हाल ही में हुए एक अध्ययन से यह खुलासा हुआ है कि शहरों के आसपास रहने वाले पक्षी ध्वनि प्रदूषण की वजह से ज़्यादा अशांत रहते हैं। शोर-शराबे के कारण अक्सर वे स्वयं अपनी आवाज़ ही भूल जाते हैं और गाड़ियों वगैरह की आवाज़ों की नकल करना शुरू कर देते हैं। ध्वनि प्रदूषण पक्षियों के लिए बड़ा खतरा बनता जा रहा है। एक अन्य रिपोर्ट के मुताबिक देश में लगातार बढ़ती मोबाइल कनेक्शनों की संख्या भी प्रकृति का संतुलन बिगाड़ने का कारण बन चुकी है। मोबाइल तरंगों से पक्षियों में दिशाभ्रम होने के अलावा प्रजनन क्षमता में कमी आती है।

पक्षी मनुष्यों की तरह अपने अधिकारों के लिए नहीं लड़ सकते और वे खामोशी से मौत के मुंह में समाते जा रहे हैं। ज़्यादातर पक्षी बदलते माहौल के अनुसार अपने आपको ढालने में सक्षम नहीं होते। पक्षियों की प्रजातियां इसलिए खत्म हो रही हैं, क्योंकि हमने समय रहते इन मासूम और प्यारे जीवों का ख्याल नहीं रखा। बर्डलाइफ इंटरनेशनल ने इन पक्षियों को बचाने के लिए कुछ सुझाव भी दिए हैं, जिसमें पक्षियों का सुरक्षित क्षेत्र बढ़ाए जाने और कड़े कानून बनाने की सिफारिश की गई है। सबसे अहम बात यह है कि लोगों को जागरूक और शिक्षित किया जाए। ***(स्रोत फीचर्स)***

अगले अंक में

स्रोत मार्च 2010
अंक 254

- **नगरीय परिवहन में फुटपाथ और साइकिल लेन**
- **मोज़ार्ट प्रभाव: कल्पना और यथार्थ**
- **वैज्ञानिक शोध, मूर्खता और सफलता**
- **वन्य प्राणी गणना के तकनीकी संकट**
- **कैसे निर्धारित करें ब्रह्मांड की आयु?**